अथी महांगो, सामी सौदो पिरेम जो,
जे तो ख्वाहिश खरीद जी, त सटि सिर जो सांगो,
परिची पाइ ग्रिचीअ में, गिला जो घांघो,
लंघे पउ लांघो, त मतिलबु थियई मन जो.

महाकवि सामी कहते हैं कि प्रेम का सौदा बड़ा ही महँगा होता है। यदि तुम्हें प्रेम का सौदा करने की, प्रेम खरीदने की इच्छा है तो पहले अपने सिर की, अपने प्राणों की चिंता छोड़ दो। अर्थात् तुम अपने प्राण न्यौछावर करने के लिए तैयार हो जाओ। दूसरे, लोक-निंदा सहने के लिए भी तुम तैयार हो जाओ। इस प्रकार यह प्रेम का सौदा मानो गहन नदी पार करने जैसा है। यह कठिन कार्य संपन्न करने के पश्चात् ही तुम अपनी मनोकामना पूर्ण कर सकते हो।

प्रेम जगत का कारण है । क्यों कि परमात्मा स्वयं ही प्रेम स्वरूप है। सच्चे प्रेम द्वारा ही परमात्मा की प्राप्ति संभव है। सच्चा प्रेम करना अथवा सच्चा प्रेम पाना बड़ा ही कठिन कार्य है। प्रेम पाने के लिए, प्रेम का सौदा करने के लिए त्याग की नितांत आवश्यकता होती है। यह सौदा, क्रय-विक्रय का व्यवहार महँगा होता है। कुछ पाने के लिए कुछ देना भी पड़ता है। ईश्वर का प्रेम पाना है तो उसके लिए सर्वस्व त्याग करने की, अपने प्राण तक न्यौछावर करने की तैयारी होनी चाहिए। संत कबीर के शब्दों में,

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देई ले जाय ।।

प्रेम-प्राप्ति की एकमात्र शर्त यही है कि अपना सिर देकर, प्रेम ले जाओ। चाहे राजा हो, चाहे प्रजा ; उसे इस प्रकार के त्याग के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए। साथ ही लोक-निंदा सहने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। अन्यथा प्रभु को प्राप्त करना कठिन है। मीराबाई ने श्रीकृष्ण से सच्चा प्रेम किया। प्राणों की भी परवाह नहीं की। लोक-निंदा सहन की परंतु प्रेम के मार्ग में विचलित नहीं हुई। सदा ही श्रीकृष्ण के प्रेम में तल्लीन रही। संत कबीर के ही शब्दों में,

प्रेम प्रेम सबकोई कहै, प्रेम न चीन्हे कोय।
आठ पहर भीना रहे, प्रेम कहावै सोय।।

परमात्मा से सच्चा प्रेम करना ही मनुष्य की बड़ी उपलब्धि है। सामीजी इसी प्रेम की ओर संकेत करते हुए, उसका महत्व प्रतिपादित करते हैं।

■